बिना मेहनत कुछ नहीं

- ब्र.कु. अनुज,दिल्ली

किस्मत देखकर किसी की आप हैरान होते होंगे, लेकिन आपको होना नहीं चाहिए, क्योंकि उसके पीछे उनकी इतनी मेहनत छुपी होती है, लेकिन वो नज़र उनके रुतबे, ओहदे को देखकर आती। आप सोचते उनके पास इतना कुछ कैसे? कितने किस्मत के धनी। नहीं। राज़ है।

हमने अखबार की कुछ कटिंग्स देखी उसका एडोरियल पढ़ने के लिए। किसी की कहानी आलोचनात्मक ढंग से पेश की गई थी, उसमें मर्म था, दर्द भी था, उपहास भी था। लेकिन लगता था कि निश्चित रूप से इसने मेहनत बहुत की है, अपने को उठाने में, तभी शायद सभी उसको पेश कर रहे हैं नज़राने में। एक छोटी सी सरकारी नौकरी का कॉम्पिटिशन इतना है कि बच्चे उसके लिए जी तोड़ मेहनत कर रहे हैं, तो भी उसे पा नहीं पा रहे। जितने भी बड़े पद हैं भारत सरकार की ओर से, जिसको सबसे ऊँची जॉब कहा जाता है, वो हमसे कितनी मेहनत मांगता है। लोग अठारह से बीस घंटे तक लगातार लगे ही रहते हैं। चाहे संगीत हो, नृत्य हो, अभिनेता, अभिनेत्री हों, जिन्हें अपने रोल को परफेक्ट बनाने के लिए दिन रात जी तोड़ मेहनत करनी पड़ती है। एक ओलम्पिक मेडल के लिए कितना कुछ करना पड़ता है, आठ आठ, दस दस साल उस पर लगाते हैं, तब जाके हमें कुछ मिलता है।

वैसे ही हमें यदि इस आध्यात्मिक क्षेत्र में कुछ करना है तो दिन रात जी तोड़ मेहनत करने की ज़रूरत है। आप क्या सोचते कि कर्मातीत अवस्था या इनलाइटेन्ड स्टेज बहुत आसान है! इसके पहले तो हमें हर पल, हर क्षण मेहनत करनी पड़ेगी। और वो मेहनत भी विधिपूर्वक हो, तब जाकर कहीं काम बनेगा, जिनका भी अध्यात्म में नाम है, उन्होंने अपने ऊपर काम किया और इतना किया कि दुनिया की सुध बुध भूल गए।

यहां थोड़ा सा योग कर लिया, थोड़ी देर कुछ पढ़ लिया, सुन लिया, हो गया कोटा पूरा। यह तो किसी सतसंग की तरह ही तो हो गया। जहां बातें बता दी जाती हैं, हम करें ना करें। यहां तो हमें तराशने का काम चल रहा है। परमात्मा हर पहलू को तराशना चाहता है, जैसे कोई भी एक्टर परफेक्ट होने के लिए अपने हर एक पहलू पर काम करता है। उसे अच्छी एक्टिंग के लिए उसके टोन पर, एक्सन्ट पर, शब्दों के उच्चारण पर, उसके श्रो पर, डायलॉग डिलीवरी पर, अच्छी हिन्दी, शुद्ध हिन्दी पर काम करना पड़ता है। वैसे ही हम भी तो अध्यात्म में हीरो एक्टर की भूमिका निभाना चाहते हैं, तो कितना अपने गुणों, शक्तियों आदि को तराशना पड़ेगा। हर पल हमें अवेयर रहना पड़ेगा कि कैसे इसे हम चेंज करें। अपने को फुल टाइम ऑबज़र्व करना पड़ेगा कि मैं कैसे सीखूं। परमात्मा हमें इतना महान देखना चाहते हैं तो महान बनने के लिए आप सोचो क्या नहीं सहना होगा, समाना होगा। संयम की शैया पर सोना होगा, नींद का त्याग करना पड़ेगा। तब जाकर हम कहीं परफेक्ट मानव की श्रेणी में अपने को गिन सकते हैं। हमारी रूहानी पर्सनैलिटी ऐसी हो कि कोई हमें देखकर इससे जुड़, इसे फॉलो करने लग जाये। आप शायद यह भी सोच सकते हैं कि आप लिखते तो हो, आप करते भी हो, जी हाँ, निश्चित रूप से करने की कोशिश कर रहे हैं, तभी तो यहां पर ध्यान जा रहा है।

आध्यात्मिकता बातचीत, भाव स्वभाव, संस्कार तक उतर जाए, इतनी मेहनत की आवश्यकता है हमें। आप चाहे इस क्षेत्र से पच्चीस साल से जुड़े हों या दस या बारह साल, कोई फर्क नहीं पड़ता है। फर्क यह पड़ता है कि इतने सालों में कितनी स्थूल बातों, माना यहां की बातों से आप प्रभावित हैं। अगर प्रभावित हैं, अच्छा लगता है, सब यहां का पसंद या नापसन्द आता है, मतलब दस प्रतिशत ही हमारे आपके अंदर ज्ञान या समझ का कुछ गया है।

आध्यात्मिक व्यक्ति इन बातों से कोसों या मीलों दूर होता है, उसे पता होता है कि सच में वह मेहमान है, जो मेहमान है उसे याद ना रहे, ये हो नहीं सकता। क्या ये बस गाने के लिए है कि यह दुनिया एक मुसाफिर खाना है, नहीं, सच में सबकुछ छोड़ के ही तो जाना है ना, तो क्यों ना हम काम करें अपने ऊपर, उस अवॉर्ड को लेने के लिए जो भगवान से हमें मिलने वाला है।

नोएडा से.26-उ.प्र.। केन्द्रीय पर्यावरण एवं वन राज्यमंत्री डॉ. महेश शर्मा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. सुदेश बहन।

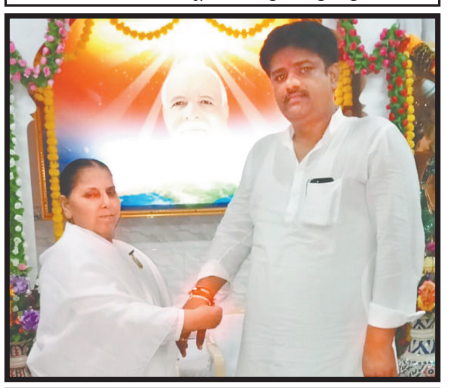

बड़ौत-उ.प्र.। नगरपालिका चेयरमैन अमित राणा को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. मोहिनी।

भदोही-उ.प्र.। औरैया के विधायक को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. विजयलक्ष्मी। साथ हैं ब्र.कु. बृजेश।

बाराबंकी-उ.प्र.। एस.पी. वी.पी. श्रीवास्तव को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. अनुराधा।

जम्मू-सुंदरबनी। डेप्युटी कमाण्डेंट जोगिन्दर सिंह को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. राजकुमारी।

महुआ-बिहार। इन्सपेक्टर तथा एस.एच.ओ. सुनील कुमार को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. दिव्या।

उपलब्ध पुस्तकें
जो आपके जीवन को बदल दे

मन की खुशी और सच्ची शांति के लिए देखें आपका अपना 'पीस ऑफ माइंड चैनल'

24x7 Adi. Free Value Based Channel

Peace of Mind CHANNEL

TATA Sky 1065 | airtel digital TV 678 | VIDEOCON d2h 497 | dishtv 1087

+91 8104 777 111 | info@pmtv.in | www.pmtv.in

सामने वाला बदले, उसकी अपेक्षा स्वयं को बदलकर परिणाम पायें

प्रश्न : मेरे परिवार में दो छोटे बच्चे, पतिदेव, सासू माँ और ससुर जी हैं। सासू माँ के साथ अनबन होती रहती है जिसका गुस्सा बच्चों और पतिदेव पर भी निकाल देती हूँ। लाख चाहने के बाद भी सासू माँ से मेरी तालमेल नहीं बन पा रही है। मुझे लगता है कि मैं सही हूँ और वो जो कह रही हैं वो गलत है। हमारी अनबन ठीक नहीं हो पा रही है, तो मुझे कैसे क्या करना चाहिए?

उत्तर : आपको यही सोचना है कि मुझे ठीक करना है। क्योंकि ज्ञान आपके पास है, दूसरे व्यक्ति का संस्कार कैसा भी हो, विचारों का भेद तो इस संसार में चलता आता है। लेकिन बात यही है कि उनके विचारों के साथ अपने विचारों को समन्वय कर देना, हार्मनी कर देना। सास सोचती होगी कि घर की मालिक मैं हूँ, मैं आदेश दूँ, बहू को उसका पालन करना है। और बहू को कोई चीज़ प्रिय नहीं लगती होगी। ये घर घर में बात होती रहती है तो यहाँ आपको बड़ा बनकर क्योंकि आप रियलाइज़ कर रही हैं, उनको रियलाइज़ होगा या नहीं होगा वो तो वो जानें। आप रियलाइज़ कर रही हैं कि गड़बड़ हो रही है। इससे गुस्सा बच्चों और पति पर उतरता है। वो सोचते होंगे हमने तो कुछ किया नहीं, हम पर गर्म क्यों हो रही है। तो नुकसान हो रहा है। और गुस्सा उतारना भी ज़रूरी है, नहीं तो आप टेंशन लेकर घूमती रहेंगी। फिर कहें किसको? तो ये विधि अपनायें... रोज़ सवेरे यही संकल्प करें कि ये बहुत अच्छी आत्मा है। मेरी गुड फ्रेन्ड है। है तो मेरी बड़ी ही ना। मुझे उनकी बात माननी है। मुझे लाइट होकर चलना है। मुझे उनको सम्मान देना है। तो निश्चित रूप से उनमें परिवर्तन होगा। लेकिन आपको

मन की बात
- राजयोगी

अपने में ये परिवर्तन अवश्य करना है कि बड़ों को मान भी देना है, उनकी हर बात को काटने के बजाय कहीं हाँ भी कर देना। मैं तो ये कहूँगा कि एक सप्ताह आप उनकी हर बात को हाँ करने लगो। भले ही आपको लगता है कि ये गलत कह रही हैं, पर कहीं कोई बिज़नेस का बड़ा नुकसान तो नहीं होने जा रहा है, वो तो घरेलू बातें होती हैं। हाँ माता जी आप बिल्कुल ठीक कहती हैं, एप्रीशियेट करने लगो, तो एक सप्ताह में ही खेल बदल जायेगा।

प्रश्न : नोटबंदी पर बहुत सारे विचार लोगों के आ रहे हैं, कई इसे अच्छा मानते हैं तो कई इसे बुरा मानते हैं। तकलीफ तो हमें भी हो रही है। आपके विचार जानना चाहते हैं कि आप इस पर क्या कहेंगे? अध्यात्म इस पर क्या कहता है?

उत्तर : देखो, नोटबंदी तो हो गई है, ये पार्ट तो पूरा हो गया है। कोई भी एक कदम जब उठाया जाता है, तो थोड़ी परेशानी तो होती ही है। प्राइम मिनिस्टर इंदिरा गांधी ने जब 1000 का नोट बंद किया था, तब भी हाहाकार हुआ था। लेकिन मैं ऐसा देखता हूँ कि इन लोगों के मन में जो भारत के भविष्य को लेकर एक विज़न है, ये उस विज़न को पूर्ण करने के लिए कार्य करते हैं। विदेशों में ऐसे ही कैशलेस पेमेंट होते हैं। काफी अच्छा रहता है। किसी को पैसा लेकर चलने की ज़रूरत नहीं, चोरी का डर नहीं। सबकुछ ठीक ठाक होता है। सरकार को भी टैक्स अच्छी तरह प्राप्त हो जायेगा। कठिनाई तो सभी को हुई है, लेकिन थोड़ा कठिनाइयों को सहना तो पड़ता ही है। कठिनाई भी हमें इसलिए हुई क्योंकि हम उस आदत में नहीं रहे। अब हम नई व्यवस्था और नए भारत के सपने को लेकर आगे बढ़ रहे हैं तो थोड़ी मुश्किलातों को सहन कर हम हमारी आने वाली पीढ़ियों के लिए अच्छा भारत दें, यही तो हमारा सपना है ना। तो ये भी थोड़े दिन में सामान्य हो जायेगा। आप इस बारे में ज़्यादा सोचें नहीं और अपने मन को व्यवस्थित करें।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

मोकामा-बिहार। आर.पी.एफ. ट्रेनिंग सेंटर में राखी बांधने के पश्चात् कमाण्डेंट युगल किशोर त्रिपाठी को ओमशान्ति मीडिया पत्रिका भेंट करते हुए ब्र.कु. बहन।

सीतापुर-उ.प्र.। ए.सी. आयोग के उपाध्यक्ष विकेश खोलिया को रक्षासूत्र बांधते हुए ब्र.कु. गिरजेश बहन।

डेरापुर-उ.प्र.। एस.ओ. लाल सिंह को रक्षासूत्र बांधने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु. प्रीति।